'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 15 19 अक्टूबर, 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

जारी है प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला

श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला में 27 से 30 सितम्बर की अवधि में चार शिविर और जुड़े। ये शिविर रायसर (बीकानेर), बरडाना (पोकरण), मानखण्ड (उदयपुर) और कांकराला (कल्याणपुर) में संपन्न हुए। इन शिविरों में 450 से अधिक क्षत्रिय बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बीकानेर प्रांत के रायसर गांव में आयोजित प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर में बेलासर, किरतासर, झंझेऊ, पंचवटी व राजपूत छात्रावास बीकानेर, नारायण निकेतन एवं विजय भवन शाखाओं के 100 से अधिक स्वयंसेवक सम्मिलित हुए तथा शक्तिसिंह आशापुरा के संचालन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर उनका स्वागत करते हुए संचालक ने कहा कि संघ ने आपका स्वागत किया है आप भी अपने जीवन में संघ का स्वागत करें, अपने जीवन को संघ शिक्षण के अनुरूप ढलने दें, सारे पूर्वाग्रहों को त्याग जिज्ञासु बन इन चार दिनों का सदुपयोग करें। संघ की साधना उर्ध्वगामी है जिसमें संघर्ष, नियमित अभ्यास एवं वैराग्य से ही लक्ष्य प्राप्ति हो सकेगी। प्रान्त प्रमुख रेवंतसिंह जाखासर भी शिविर में उपस्थित रहे।

पूर्व सरपंच नारायणसिंह रायसर ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी अवधि में पोकरण प्रांत के बरडाना गांव में भी शिविर संपन्न हुआ, जिसका संचालन अमरसिंह रामदेवरा ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि क्षत्रिय में रज की प्रधानता होती है। यह रज यदि सत के साथ मिल जाए तो हम राम और कृष्ण की भांति श्रेष्ठ बनेंगे और यदि हमारा रज तम के साथ मिल गया

कांकरला

तो हम रावण और कंस भी बन सकते हैं। हमारी रजशक्ति को सत्त्वोन्मुखी बनाने के लिए ही श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे शिविरों का आयोजन करता है। शिविर में बरडाना, आसकन्द्रा, ऐटा, भैंसडा, राजगढ़, दिधु, अजासर, अवाय, बैतीना, छायण, लोहारकी, सत्याया आदि गांवों के लगभग 90 युवाओं व बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था आम्बसिंह बरडाना व भंवरसिंह बरडाना ने ग्रामवासियों के सहयोग से संभाली।

इसी प्रकार एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर उदयपुर ग्रामीण प्रांत के मानखण्ड (फतहनगर) में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने गंगासिंह साजियाली के सहयोग से किया। उन्होंने शिविरार्थियों से श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य की गंभीरता को समझने व जागृत रहकर संघ शिक्षण को आचरण में ढालने की बात कही। भौमसिंह चुण्डावत खेडी, स्वरूपसिंह बिजेरी, भैरूसिंह, अभयसिंह, रामसिंह, दिलीप सिंह (मानखण्ड) आदि ने मिलकर व्यवस्था संभाली। शिविर में बेमला, भेकडा, कांकरवा, चुण्डावत खेड़ी, जगतसिंह जी का खेड़ा, कदमाल, वांगरोदा, जगपुरा, कुंचौली, मानखण्ड, रावला कुआं आदि गांवों के लगभग 90 बालकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर के विदाई कार्यक्रम में दलपतसिंह गुडा केसरसिंह, पुष्पेन्द्रसिंह, रविन्द्र प्रताप सिंह केरली, दिग्विजयसिंह श्यामपुरा (लाडपुरा), भानुप्रतापसिंह झीलवाडा, भौमसिंह, भैरूसिंह, मांगीलाल पालीवाल सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

श्रेयसी सिंह को अर्जुन अवार्ड

इस वर्ष आस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में आयोजित 21वें कॉमनवेल्थ खेलों में डबल ट्रेप शूटिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने वाली श्रेयसीसिंह को राष्ट्रपति द्वारा 25 सितम्बर 2018 को अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया है। पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं बिहार के बांका से पूर्व सांसद दिग्विजयसिंह एवं बांका से ही सांसद रह चुकी पुतुल कुमारी की पुत्री श्रेयसी सिंह ने 2010 एवं 2014 के कॉमन वेल्थ खेलों में रजत पदक जीता था। 2017 में एशियन शॉटगन प्रतियोगिता में कांस्य पदक व 2017 में ही ब्रिस्बेन में आयोजित प्रतियोगिता में इन्होंने रजत पदक जीता था।

पूर्व छात्राओं व वर्तमान छात्राओं का स्नेहमिलन

सीकर स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान के छात्रावास की पूर्व छात्राओं का मिलन कार्यक्रम 22 सितम्बर को पद्मनी छात्रावास प्रांगण में रखा गया। प्रथम बैच से अंतिम बैच तक की छात्राओं में से 31 पूर्व छात्राएं इस कार्यक्रम में शामिल हुईं। 22 की शाम को प्रारम्भ हुआ यह मिलन कार्यक्रम 23 सितम्बर रविवार को अपराह्न भोजन तक चला। 22 की शाम को नई पुरानी सभी छात्राओं ने साथ में भोजन किया एवं भोजनोपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ जिसमें नृत्य, नाटक आदि शामिल थे। 23 को प्रातः नित्य कर्मों से निवृत हो सभी ने हवन किया एवं हवन उपरान्त देव भोज के रूप में अल्पाहार लिया। तत्पश्चात् आयोजित कार्यक्रम में पूर्व छात्राओं ने अपने अनुभव सुनाए एवं छात्रावास से जुड़ी अपनी यादें ताजा की। छात्रावास के प्रारम्भ से लेकर अब तक हर गतिविधि में अग्रणी भूमिका में रहे वयोवृद्ध स्वयंसेवक रतनसिंह नंगली ने अपने छात्रावास संबंधी एवं जीवन के अनुभव बताए। छात्रावास में सहयोगी के रूप में रहे शिवलालसिंह राजपूरा ने भी अपने अनुभव सुनाए।

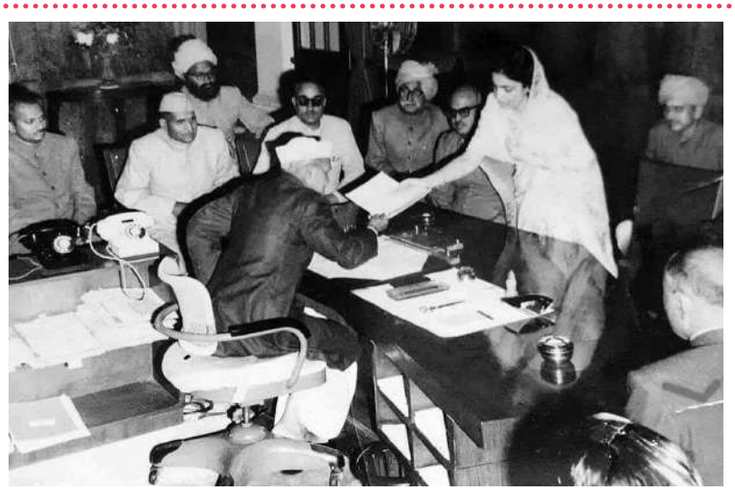

भू-स्वामी आंदोलन के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ समझौता वार्ता का छायाचित्र। इस वार्ता में श्रद्धेय आयुवानसिंह जी एवं पूज्य तनसिंह जी के नेतृत्व में समाज का प्रतिनिधि मंडल शमिल हुआ था।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

महान कार्य हमेशा महान संकल्पों का परिणाम होते हैं। ऐसे महान कार्यों को संपादित करने वाले महापुरुषों के संकल्प के धरातल पर आने पर ही ये कार्य संपादित होते हैं और उनका यह कार्य संपादन ही संसार के लिए उन्हें महान बनाता है। इस प्रकार मूल में वह संकल्प ही होता है जो महापुरुष के अंतर में उठा करता है। उस संकल्प की दृढ़ता ही उस कार्य के लिए प्रेरक शक्ति हुआ करती है इसलिए महापुरुषों का जीवन संकल्प के लिए जीने या मरने की कहानी होती है। संकल्प की दृढ़ता ही वह महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है जो महानता की ओर अग्रसर करती है। पूज्य तनसिंह जी संकल्प के धनी थे, उनकी संकल्प के प्रति दृढ़ता के अनेक उदाहरण पढ़ने और सुनने को मिलते हैं। वे बचपन से ही संकल्प के धनी थे। वे मात्र पौने दो वर्ष के थे तब उनके पिताजी का देहावसान हो गया। माताजी के अलावा कोई सहारा नहीं था। बिना सहारे के बालक के साथ संसार का व्यवहार अच्छा नहीं हुआ करता। ऐसा ही पूज्य तनसिंह जी के साथ हुआ। उनकी प्रारम्भिक पाठशाला का अध्यापक उनके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करता था। यहां तक कि अपनी पाशविक वृति के कारण वह पूज्य श्री के कान में कंकर डालकर उमेठा करता था। पूज्य श्री इस अपमानजनक व्यवहार से इतने व्यथित हुए कि उन्होंने आत्महत्या तक का विचार कर लिया लेकिन ऐसा विचार उन्हें समीचीन नहीं लगा और उन्होंने घर से स्कूल के लिए आकर भी स्कूल जाना बंद कर दिया। मां सा को जब पता चला तो उन्होंने उन्हें डराया, डांटा व समझाया। उनसे संकल्प लिया कि वे आगे से कभी स्कूल में अनुपस्थित नहीं रहेंगे। पूज्य श्री ने माताजी की आज्ञा पर लिए गए उस संकल्प को उक्त अध्यापक के अमानजनक व्यवहार के बावजूद निभाया एवं मां सा को कभी शिकायत का मौका नहीं दिया। ऐसी ही एक अन्य घटना उनके बचपन की ही है। एक बार उन्होंने घर से कुछ पैसों की चोरी कर ली। मांसा को जब पता चला तो वे बुहत दुःखी हुई एवं दुःखपूर्वक पूज्य श्री को समझाया कि चोरी करना अच्छी बात नहीं होती। पूज्य श्री ने उस दिन से संकल्प लिया और फिर माताजी को ऐसी कोई शिकायत नहीं मिली। दोनों ही घटनाएं बचपन की साधारण घटनाएं जान पड़ती हैं लेकिन जो बालक बचपन में छोटे-छोटे संकल्पों की पालना में अपने द्वारा की गई गलती की कभी पुनरावृत्ति नहीं करता वही आगे चलकर दृढ़ प्रतिज्ञित बनता है और समाज, राष्ट्र, संसार एवं स्वयं के प्रति लिए गए महान संकल्पों को फलीभूत करता है। पूज्यश्री की जीवन कहानी ही एक संकल्प के धरातल पर आने की कहानी है और संकल्पवान होने की उनकी विशेषता उनमें प्रारम्भ से ही थी।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(4) अनुप्रयुक्त विज्ञान (Applied Sciences) : अनुप्रयुक्त विज्ञान अथवा व्यावहारिक विज्ञान के अन्तर्गत उपलब्ध वैज्ञानिक ज्ञान व सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप से प्रयोग किया जाता है। यह कॅरियर निर्माण की दृष्टि से बढ़ता हुआ व उच्च संभावनाओं वाला क्षेत्र है। अनुप्रयुक्त विज्ञान के अन्तर्गत कॅरियर निर्माण की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों का यहां वर्णन किया जा रहा है :

(i) बायोटेक्नोलॉजी (Bio Technology) : बायो टेक्नोलॉजी अथवा जैव प्रौद्योगिकी विगत लगभग चौथाई शताब्दी की सर्वाधिक प्रगतिशील व लाभकारी इण्डस्ट्रीज में से एक रही है। जैव-प्रौद्योगिकी अनेक उद्योगों यथा खाद्य, औषधि, रसायन, जैव उत्पाद, वस्त्र, पोषण, पर्यावरण, पशुपालन आदि तक विस्तृत है। इसके अन्तर्गत जेनेटिक्स, मॉलिक्युलर बायोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री, एम्ब्रायोलॉजी (भ्रूण विज्ञान), कोशिका जीव विज्ञान, केमिकल इंजीनियरिंग, इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी, रोबोटिक्स आदि का अध्ययन किया जाता है। व्यवस्थित रूप से, विधिपूर्वक, धैर्यपूर्वक व दक्षतापूर्वक कार्य करने की क्षमता रखने वाले अभ्यर्थी इस क्षेत्र में सफल होते हैं। साथ ही लम्बे समय तक प्रयोगशाला आदि में कार्य करना तथा कम्प्यूटर की अच्छी जानकारी भी आवश्यक है। भारत में जैव-प्रौद्योगिकी के अर्न्तगत उपलब्ध प्रमुख कोर्सेज की सूची इस प्रकार है :

(A) बी.ई. इन बायोटेक्नोलॉजी।
(B) बी.एस.सी. इन बायोटेक्नोलॉजी।
(C) बी.एस.सी. इन एप्लाईड बायोटेक्नोलॉजी।
(D) बी.एस.सी. इन एडवान्सड जूलोजी एण्ड बायोटेक्नोलॉजी।
(E) बी.एस.सी इन मेडिकल बायोटेक्नोलॉजी।
(F) बी.एस.सी. इन एनिमल बायोटेक्नोलॉजी।
(G) बी.टेक. इन बायोप्रोसेस टेक्नोलॉजी।
(H) बी.टेक. इन बायोटेक्नोलॉजी।
(I) बी.टेक. इन इण्डस्ट्रियल माइक्रोबायोलॉजी।
(J) बी.टेक. इन मोलिक्युलर एण्ड सेल्यूलर इंजीनियरिंग।
(K) एडवान्स्ड डिप्लोमा कोर्स इन बायोटेक्नोलॉजी।
(L) डिप्लोमा इन बायो टेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग।
(M) सर्टिफिकेट कोर्स इन एडवान्स्ड बायोटेक्नोलॉजी।
(N) सर्टिफिकेट कोर्स इन बायोटेक्नोलॉजी एण्ड प्लान्ट टिस्यू कल्चर।
(O) बी.एस.सी. ऑनर्स इन बायोटेक्नोलॉजी।

उपरोक्त सभी कोर्सेज में सामान्यतया 12वीं कक्षा के अंकों के आधार पर प्रवेश मिलता है। इनेमें B.E. व B. Teck कोर्सेज में गणित या जीव विज्ञान दोनों स्ट्रीम के विद्यार्थी पात्र माने जाते है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

तारागढ, अजयपाल, आना सागर

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

तारागढ : अरावली पर्वत माला की सुदृढ़ पहाड़ी पर समुद्र तल से 2900 फुट की ऊंचाई पर स्थित अजमेर का तारागढ किला विश्व विख्यात है। इसे गढ बीठली तथा अजयमेरू दुर्ग भी कहा जाता है। यह सातवीं शताब्दी में बनना प्रारम्भ हुआ था जो 80 एकड़ क्षेत्रफल में सुदृढ़ ऊंची एवं चौड़ी दीवारों के मध्य बना हुआ है। सुरक्षा की दृष्टि से यह किला बहुत ही मजबूत है। पहाड़ों को काट कर किले में पानी एकत्र करने के सरोवर बनाए गए हैं। किले के चारों ओर 14 बड़े बुर्ज बने हुए थे। लक्ष्मी पोल से होकर किले के मुख्य दरवाजे तक पहुंचा जाता था। तारागढ किले पर अजमेर बसाने वाले राजा अजयपाल चौहान से लेकर बारहवीं शताब्दी तक चौहान राजपूत शासकों का राज्य रहा। मुसलमानों का पहला बड़ा आक्रमण तारागढ पर 1024 में मोहम्मद गजनवी द्वारा किया गया। 1192 में सम्राट पृथ्वीराज चौहान शाहबुद्दीन गौरी से पराजित हुए। बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक, अलाउद्दीन खिलजी सूरी वंश के शासकों ने तारागढ पर आक्रमण किए। तारागढ 100 वर्ष तक मुगलों के साम्राज्य का हिस्सा रहा। अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब का अजमेर से खूब नाता रहा। मेवाड़ के सिसोदियों, आमेर के कच्छवाहों एवं मारवाड़ के राठौड़ों के साथ-साथ तारागढ पर मराठों ने भी शासन किया। अंग्रेजों के शासन काल में अजमेर राजपूताना की राजधानी रहा तथा तारागढ किले को अंग्रेजों ने अपनी कचहरी के साथ-साथ अंग्रेज रोगी सैनिकों के इलाज हेतु सैनीटोरियम के रूप में उपयोग लिया।

अजयपालजी : तारागढ किले के पश्चिम तथा फॉय सागर झील से दक्षिण में 6 किमी आगे प्रसिद्ध तीर्थ अजयपालजी है। यह हिन्दुओं की अटूट श्रद्धा का केन्द्र है। अजमेर की स्थापना करने वाले राजा अजयपाल चौहान ने वृद्धावस्था में राजपाट त्यागकर संन्यास ग्रहण कर लिया तथा अपना अन्तिम समय इसी स्थान पर व्यतीत किया था। यह बहुत ही रमणीक स्थल है। यहां सुन्दर पहाड़ों के मध्य एक सरोवर का जल झरने के रूप में नीचे दूसरे सरोवर में गिरता है। यहां विशाल वृक्षों की सघन छाया है। सरोवर के किनारे बाबा अजयपाल जी का मंदिर है जिसमें पाषाण की विशाल प्रतिमा में सोटा (धर्मदंड) लिए वे खड़े हैं। इस मूर्ति को बहुत आस्था से पूजा जाता है। लोग मन्नते पूरी होने पर प्रसाद चढ़ाते हैं। भाद्रपद शुक्ला 6 को यहां विशाल मेला भरता है।

आना सागर : 1133 ई. में महाराजाधिराज परमेश्वर परम भट्टारक श्रीमद् अर्णोराज देव चौहान के नाम से अर्णोराज राज गद्दी पर बैठे। इन्हीं अर्णोराज ने जो अन्तिम हिन्दू सम्राट कहे जाने वाले नरेश पृथ्वीराज चौहान (तृतीय) के पितामह थे अजमेर की सुन्दर झील आना सागर का निर्माण करवाया था। अजमेर नगर की समृद्धि विस्तार और प्रसिद्धि में जितना श्रेय तारागढ दुर्ग का है उससे कहीं अधिक इस सुन्दर झील का है। मुगल और अंग्रेज इस झील के सौन्दर्य पर मुग्ध थे। अर्णोराज के शासन काल में तुर्कों ने पुष्कर और अजमेर पर आक्रमण किया। अजमेर एवं पुष्कर के मध्य विशाल मैदान पर अर्णोराज ने ऐसा भयंकर नरसंहार किया कि वहां लाशों एवं रक्त से पूरा मैदन लथपथ हो गया। मांस के लोथड़ों से वहां भारी सड़ाध फैल गई। राजा अर्णोराज ने पुष्कर के नाग पहाड़ों से निकलने वाली लूणी नदी के पानी को नहर बनाकर युद्ध मैदान की ओर मोड़ कर बहाव से इसे साफ और शुद्ध कर दिया और जन सहयोग से उस युद्ध स्थल वाले मैदान के चारों तरफ विशाल पक्की दीवार का निर्माण कर आना सागर झील का स्वरूप दिया। इस झील के निर्माण से अजमेर के लोगों व पशुओं को पीने का पानी उपलब्ध हो गया तथा एक विशाल सेना को इस क्षेत्र में लम्बे समय तक बनाए रखना भी संभव हो गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

मानखंड

रायसर

कड़वा

बैंगलोर

(पृष्ठ एक का शेष)... शिविर की विदाई उपरांत दलपतसिंह, पुष्पेन्द्र सिंह, रविन्द्र प्रताप सिंह, दिग्विजयसिंह, भानुप्रतापसिंह आदि ने शिविरार्थियों से संवाद कर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एवं संघ शिक्षण को जीवन में उतारने का आह्वान किया। बालोतरा प्रांत के कांकराला गांव में भी इसी अवधि में एक शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में समदड़ी, कल्याणपुर, बालोतरा, सिवाना, लूणी तथा पादरू क्षेत्र के लगभग 175 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालक मनोहरसिंह सिणेर ने कहा कि इन चार दिनों में संघ ने अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा हमारे भीतर क्षात्रधर्म का बीज बोया है। संघ के निरन्तर सम्पर्क में रहकर हमें साधना द्वारा इस बीज को अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित करना है। देवीसिंह कांकराला ने राजपूत युवा संघ कांकराला के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। प्रांत प्रमुख रणसिंह टापरा भी शिविर में उपस्थित रहे।

इसी प्रकार प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला में 7 से 14 अक्टूबर की अवधि में चार कड़ियाँ और जुड़ी। दक्षिण भारत में बढ़ते संघ कार्य के अनुरूप एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर बैंगलोर में चन्नपटना नामक स्थान पर 11 से 14 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर उनका स्वागत करते हुए शिविर प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा ने कहा कि जिन श्रेष्ठताओं को, संस्कारों को हम भूलते जा रहे हैं, उनके संरक्षण और पुनर्विकास के लिए यह अभ्यास कराया जा रहा है। क्षात्रधर्म की पुनर्स्थापना ही संघ का लक्ष्य है और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही यह साधना का क्रम चल रहा है। हम पर कितना महत्वपूर्ण दायित्व है इसका हमें यहां अनुभव करना है और जागृत रहकर उस दायित्व को निभाने हेतु तैयार होने का अभ्यास करना है। शिविर में स्थानीय स्वयंसेवकों के साथ-साथ स्थानीय मुम्बई, पुणे, सूरत व राजस्थान के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बालाजी सिंह जी, देवेंद्रप्रताप सिंह, हीरसिंह, नागरतन सिंह (चेतक वाहिनी सम्पादक), लक्ष्मण सिंह अध्यक्ष राजपूताना हाउस आदि ने व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। इसी प्रकार 7 से 10 अक्टूबर की अवधि में तीन प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुए। बालोतरा प्रान्त में पाटोदी के पास स्थित कालाथल गांव में शिविर आयोजित हुआ। जसवंतसिंह बुडीवाड़ा के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में पादरू, बालोतरा, पाटोदी, बायतु, कल्याणपुर, शेरगढ़ क्षेत्र के 100 से अधिक युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविरार्थियों को विदाई देते हुए शिविर संचालक ने कहा कि यहां के सात्विक वातावरण में आपने जो संस्कार अर्जित किए हैं, उनकी वास्तविक परीक्षा बाहरी वातावरण में होगी, जहाँ हम जा रहे हैं। बाहर के विषैले वातावरण का प्रभाव कम करने के लिए संघ का आपको स्थायी आमंत्रण है, आप बार-बार यहाँ आते रहें और अपने अभ्यास को दृढ़ता प्रदान करते रहें। कालाथल गांव के सभी समाजबन्धुओं ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। प्रान्त प्रमुख श्री राण सिंह टापरा भी शिविर में उपस्थित रहे। जोधपुर संभाग में ओसियाँ प्रान्त के बापिणी मंडल का शिविर कड़वा गांव में आयोजित हुआ। सांवतसिंह भोमियाजी के ओरण में सम्पन्न इस शिविर का संचालन भरतपालसिंह दासपां ने किया। शिविर में कड़वा, राम सिंह की ढाणी, बापिणी, बेदू, लवारन, मतोड़ा, निम्बो का तालाब, भेड़, हरियाली आदि गांवों के 94 क्षत्रिय बालक व युवा सम्मिलित हुए। शिविर संचालक ने शिविरार्थियों को अपने पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास को स्मरण रखते हुए उनके गुणों को अपने भीतर उतारने की बात कही। श्री राजू सिंह कड़वा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी प्रकार जयपुर संभाग के अंतर्गत आने वाले अलवर प्रान्त के चौबारा गांव में भी शिविर सम्पन्न हुआ जिसका संचालन विक्रम सिंह सिंघाना ने किया। उन्होंने कहा कि संघ में संख्या का नहीं दायित्वबोध और कर्मठता का महत्त्व है। धर्म की कठिन राह पर चलने वाले सदैव थोड़े ही होते हैं। संघ को ऐसे दीपक की आवश्यकता है जो अपने सम्पूर्ण स्नेह से जले, कुछ भी छिपाकर न रखे, चाहे उनकी संख्या कितनी भी कम क्यों न हो। शिविर में पीपली, शाहजहांपुर, चौबारा आदि गांवों से शिविरार्थी सम्मिलित हुए। चौबारा गांव के समाजबंधुओं ने मिलकर व्यवस्था संभाली।

बालेसर मंडल व जोधपुर शहर का शाखा भ्रमण

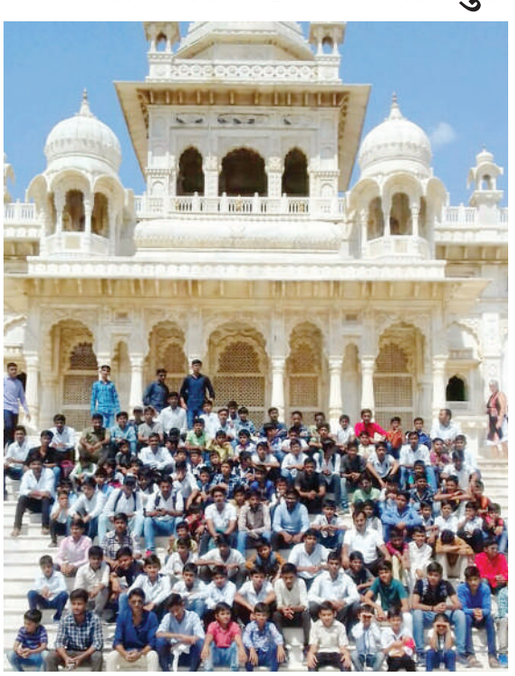

बालेसर मंडल की विभिन्न शाखाओं का एक दिवसीय भ्रमण 30 सितम्बर को पहाड़ी पर स्थित बिंजा बाबा धाम एवं गाजणा माता मंदिर पर रखा गया। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम में निज निर्माण के सांघिक मार्ग पर सामूहिक चिंतन और मनन किया गया। पूज्य तनसिंह जी रचित पुस्तक बदलते दृश्य के अवतरणों का पठन किया गया। प्रेमसिंह रणधा ने कहा कि संघ संजीवनी बूटी है जो हमारी संस्कृति का रक्षण व पोषण हम सब में शक्ति का प्रवाह करके करता है। 15 अक्टूबर से आयोज्य मा.प्र.शि. की तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। भ्रमण कार्यक्रम में शाखा के स्वयंसेवकों के साथ-साथ अन्य सहयोगी भी शामिल हुए। इसी क्रम में जोधपुर शहर की शाखाओं का शाखा भ्रमण 30 सितंबर को ही रखा गया। सभी स्वयं सेवक जोधपुर के आर्मी क्षेत्र में आयोजित हथियार प्रदर्शनी देखने पहुंचे। तत्पश्चात मेहरानगढ़ किले एवं जसवंतथड़ा का भ्रमण किया। प्रांत प्रमुख उमेदसिंह सेतरावा ने पूरे भ्रमण का निर्देशन किया।

संपादकीय

व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं समूह के अधिकार

संघ के तृतीय संघ प्रमुख श्रद्धेय नारायणसिंह जी ने लिखा है कि हमारा जीवन सर्वथा निरपेक्ष इकाई नहीं है बल्कि समाज का एक अंग मात्र है। यह भारतीय अवधारणा है जहां व्यक्ति को एक आधारभूत इकाई माना गया है लेकिन ऐसी इकाई जो अपने आसपास की सभी इकाइयों से असंबद्ध नहीं है, निरपेक्ष नहीं है बल्कि अन्योन्याश्रित है और एक-दूसरे से प्रभावित होती है। लेकिन पश्चिम ने व्यक्ति को आधारभूत इकाई मानते हुए उसे निरपेक्ष भी मान लिया। उसे स्वच्छंद छोड़ने का समर्थन किया और उसी समर्थन के आलोक में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नारा दिया गया जो वास्तव में स्वतंत्रता नहीं बल्कि स्वच्छंदता थी। इसी स्वच्छंदता की अवधारणा को पुष्ट करने वाले निर्णय हमारे माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा विगत दिनों दिए गए हैं जिनसे निश्चित रूप से भारतीयता पर आघात पहुंचा है। समलैंगिकता का हमारे यहां अप्राकृतिक संबंध नामकरण किया गया लेकिन माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने हमारे भारतीय संविधान के आलोक में ऐसे अप्राकृतिक संबंधों को मान्यता प्रदान करते हुए,जो अप्राकृतिक है उसे न्याय संगत घोषित किया है और इसके पीछे तर्क दिया गया है कि भारतीय संविधान व्यक्तिगत स्वतंत्रता का पोषक है और ऐसे संबंध को मान्यता प्रदान न करना संविधान की मूल भावना के इतर है। दूसरा निर्णय यह दिया गया कि कोई महिला एवं पुरुष यदि स्वैच्छा से विवाहेत्तर संबंध बनाते हैं तो ऐसे संबंधों को भी अब अपराध नहीं माना जाएगा क्योंकि माननीय न्यायालय के अनुसार ऐसा करना भारतीय संविधान में वर्णित व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन है। दोनों ही निर्णय पर विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि परिवार नामक भारतीय संस्था को छिन्न-भिन्न करने की सम्पूर्ण तैयारी कर ली गई है। हमारे में से अनेक लोग इसके लिए माननीय न्यायालय की आलोचना कर रहे हैं लेकिन न्यायालय का निर्णय तो संविधान के आलोक में हुआ है। न्यायालय संविधान से बाहर जाकर कुछ करता नहीं है ऐसे में प्रश्न संविधान निर्माताओं की मान्यता एवं धारणा पर उठता है। मुश्किल यह है कि आजादी के समय से ही इस देश के कर्णधार वे लोग बने जिनका आदर्श भारत कभी नहीं रहा। उनका आदर्श जहां था या है वहां व्यक्ति को निरपेक्ष इकाई माना जाता है। उनके यहां व्यक्ति के अधिकार असीमित हैं, व्यक्ति की इच्छाओं की प्रत्येक बाधा वहां पर अनैतिक है। उनका यह मानना है कि दो व्यक्ति आपसी रजामंदी से जो भी कुछ करते हैं उसे समाज को स्वीकार करना चाहिए। इसलिए वहां नैतिकता की परिभाषा ही अलग हो जाती है। भारत की भाषा में नैतिकता का अर्थ व्यक्ति के अधिकारों के साथ-साथ समूह के अधिकारों की रक्षा करना है। इसलिए समाज या समूह ने स्वतः प्रेरणा से कुछ ऐसे नियम बनाए जिनके माध्यम से व्यक्ति के साथ-साथ सम्पूर्ण समाज के अधिकारों की रक्षा हो सके। परिवार इसी प्रकार की इकाई है जो समाज और व्यक्ति को जोड़ती है तथा व्यक्ति को समाज के लिए तैयार करती है साथ ही व्यक्तिगत जीवन में समाज के अनावश्यक अतिक्रमण को नियंत्रित भी करती है। संरक्षण भी प्रदान करती है लेकिन दुर्भाग्य से भारत के नए भाग्य विधाताओं ने जिनको अपना आदर्श माना उनके वहां परिवार नाम की इकाई या तो थी ही नहीं और थी तो अति कमजोर। इसीलिए वहां पशुवत जीवन को मान्यता प्रदान की गई। व्यक्तिगत इच्छाओं की अबाधित पूर्ति की चाह ही ताजा-ताजा निर्णयों की प्रेरक है। व्यक्तिगत जीवन में उन माननीय न्यायाधीश महोदय से भी पूछा जाएगा तो वे इन निर्णयों के प्रति असहज ही होंगे लेकिन न्यायाधीश के रूप में तो उन्होंने भारतीय संविधान के आलोक में अपना निर्णय दिया है ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि कहीं हमारा संविधान हमें आलोक की अपेक्षा अंधकार की ओर तो नहीं ढकेल रहा है जहां मनुष्यता का स्थान पशुता ले लेगी। व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं समाज या समूह के अधिकारों के बीच एक संतुलन होना आवश्यक है और यह संतुलन केवल दो व्यक्तियों की रजामंदी से नहीं बनता बल्कि सम्पूर्ण समाज की रजामंदी से बनता है। हमारे यहां तो इतनी सावधानी अपेक्षित है कि कहीं मेरे व्यवहार का मेरे पड़ौसी के जीवन पर तो दुष्प्रभाव नहीं पड़ रहा है ऐसे में इस प्रकार के निर्णय क्या इस सावधानी से विरत होने को प्रेरित नहीं करते? वास्तव में तो इन निर्णयों का घातक प्रहार हमारे सभ्य समाज पर होना ही है लेकिन जिनके यहां व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति ही सभ्यता का मापदंड माना जाता हो उनके लिए इस चिंता के क्या मायने? माननीय न्यायालय का एक और निर्णय आजकल चर्चा में बना हुआ है जो एक मंदिर में महिलाओं के प्रवेश की अनुमति प्रदान करने से संबंधित है। कुछ लोग इस निर्णय को धर्म से जोड़ रहे हैं तो कुछ लोग इसे महिला समानता या महिला स्वतंत्रता से जोड़ रहे हैं। वास्तव में तो देखा जाए तो धर्म विशुद्ध रूप से परमात्मा तक की दूरी को तय कराने वाले मार्ग का नाम है और उस मार्ग में प्रत्येक प्राणी को आरूढ़ होने का समान अधिकार परमेश्वर प्रदत्त है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी

हमारी चाह और सामाजिक कार्य

संचार माध्यमों के विस्तार ने विचार संप्रेषण को सुलभ बना दिया है। आज हर कोई अपनी बात को सार्वजनिक पटल पर व्यक्त कर देता है जो पहले इतनी आसानी से संभव नहीं था। समाज के नाम पर भी इस प्रकार का विचार संप्रेषण चलता रहता है। पहले यह सामाजिक कार्यक्रमों एवं पत्र पत्रिकाओं तक सीमित था लेकिन आज के जमाने के उपलब्ध साधनों में यह व्यापक हो गया है। इस प्रकार के संप्रेषण का वर्गीकरण करें तो समाज को लेकर हमारी चाह के कई स्तर उभर कर आते हैं।

विभिन्न लोग विभिन्न स्तर की बात करते हैं और उनकी ये बातें यह स्पष्ट करती हैं कि आखिर समाज को लेकर उनकी चाह क्या है? अनेक लोग अपनी धाक जमें, समाज की धाक जमें इस विचार से प्रभावित होते हैं और विचार संप्रेषण में उनकी यही चाह प्रकट होती है। वे चाहते है कि दूसरे समाज हमारे प्रभाव के आगे नतः शीश होने चाहिए। वह प्रभाव येन केन प्रकारेण प्राप्त किया जाना चाहिए। ऐसे लोग अपराधियों के प्रभाव से भी प्रभावित होते हैं और उस प्रभाव को भी अपना आदर्श मानते हैं। उनके लिए समाज के नाम से डर व्याप्त होना ही प्रभाव पैदा करना है और अन्य समाजों एवं व्यवस्था में ऐसा डर पैदा करना ही उनकी नजर में सामाजिक कार्य है। आज युवा वर्ग विशेष रूप से ऐसी चाह को यदा कदा प्रकट करता रहता है और विगत वर्षों में हमारे समाज की ऐसी स्थिति इसको पुष्ट करती है। दूसरी प्रकार की चाह भी प्रभाव की ही होती है। लेकिन इस प्रभाव के पीछे अपराध का महिमा मंडन तो न्यून अंश में होता है लेकिन भौतिक उपलब्धियों की प्रधानता होती है। उनके अनुसार समाज के व्यक्ति सत्ता, प्रशासन, पैसा आदि में जितना अधिक आगे होंगे उतना ही अच्छा होगा और इसके लिए वे इन भौतिक साधनों को जुटाने के कार्य को ही समाज का काम मानते हैं। इन साधनों को जुटाने के लिए किए गए प्रयास कितने पवित्र हैं यह बात इनके लिए गौण हो जाती है इसलिए समाज के राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक अधिकारी, व्यवसायी आदि भौतिक साधनों से युक्त लोग ही इनके आदर्श होते हैं और ऐसा करना ही इनकी नजर में सामाजिक कार्य है। एक अन्य प्रकार की चाह समाज को भौतिक साधनों के युक्त करना है। इनका सोचना यह होता है कि पूरा समाज पैसों वाला हो, पूरे समाज का राजनीतिक प्रभाव हो, पूरा समाज शिक्षा में आगे बढ़े, पूरे समाज के लोग नौकरियों में हो, ये बातें ही समाज को प्रतिष्ठा प्रदान करती है इसलिए समाज में इस ओर प्रयास करना ही सामाजिक कार्य है। उपयुक्त तीनों ही प्रकार के लोग जमाने से प्रभावित होकर वही सब करना चाहते हैं जो जमाना कर रहा है। इनके उदाहरण भी प्रायः अन्य समाजों के ही होते हैं। ये लोग इतिहास के प्रति अनुदार किस्म के होते हैं क्योंकि इनके अनुसार वर्तमान में अन्यों की तरह ही प्रभाव पैदा करना है तो अन्यों को देखकर ही अनुकरण करना चाहिए।

एक अन्य प्रकार की चाह इतिहास को लेकर होती है। ऐसी चाह वाले लोग इतिहास में ही जीते हैं। इतिहास के गौरव के गुणगान करते हैं ओर उसी गुणगान के भरोसे अपने आपको वर्तमान में भी महत्व दिलवाना चाहते हैं। वास्तव में यह ब्याज के बाद मूलधन को खाने की चाह है जो लंबे समय से जारी है और यही गति रही तो मूलधन की एक दिन समाप्त हो जाएगा क्योंकि कोई भी ऐसा संग्रह नहीं जिसमें कुछ जोड़ा न जाए तो वह अनवरत बना रहे। एक चाह ऐसी है जो इतिहास में हमारे प्रभाव के कारणों को जानकर उन कारणों पर काम करने को समाज का काम मानती है। इस चाह के अनुसार कोई भी प्रभाव तब तक स्थायी नहीं होता जब तक कि उसके साथ दायित्व बोध का भाव नहीं जुड़ जाए। वास्तव में तो दायित्व बोध आने पर प्रभाव की चाह ही निःशेष हो जाया करती है। इसलिए इस प्रकार के लोगों के लिए समाज में दायित्व भाव जाग्रत करना ही समाज का काम है। इनके अनुसार प्रभाव प्राप्त करने से नहीं बल्कि छोड़ने से मिलता है। जिस प्रभाव के अभाव में हम आज तडप रहे हैं वह प्राप्त करने की दौड़ नहीं थी बल्कि छोड़ने की दौड़ थी और छोड़ वह सकता है जिसका छोड़ने का, त्याग करने का, बलिदान होने का स्वभाव हो इसलिए इस चाह के लोगों का मानना है कि जमाने में जीवन निर्वाह करने के लिए हमें जीवन के सभी व्यवहार यथोचित करने ही पड़ेंगे लेकिन इन सब के साथ हमें इस बात का मूल्यांकन करना पड़ेगा कि मैं कितना अपने यशस्वी पूर्वजों की ओर गतिमान हुआ हूँ और मेरी यही गति वास्तव में समाज का कार्य है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	मा.प्र.शि.	25.10.2018 से 31.10.2018 तक	**कानोड़** (सिवाना) जिला बाड़मेर। बायतु, गिडा, बालोतरा से बस है। 'शक्तिमान', कोजराजसिंह की ढाणी।
2.	प्रा.प्र.शि.	26.10.2018 से 29.10.2018 तक	**खेतलावास**। (जालोर)। सायला-जीवाणा से टैक्सी।
3.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	27.10.2018 से 30.10.2018 तक	तनायन, नारायण विहार, बनाड़ रोड़, **जोधपुर**
4.	मा.प्र.शि.	27.10.2018 से 02.11.2018 तक	**राणियाबास** (नायला) जिला-जयपुर। **सम्पर्क सूत्र :** 9414228383
5.	प्रा.प्र.शि.	27.10.2018 से 30.10.2018 तक	महारानी लक्ष्मीबाई इन्टर कॉलेज, **बांदा** (उत्तरप्रदेश)।
6.	प्रा.प्र.शि.	28.10.2018 से 31.10.2018 तक	**रायथलिया** (मकराना) जिला नागौर। कुचामन-तोषीणा मार्ग पर स्थित। कुचामन से पर्याप्त साधन। **सम्पर्क सूत्र :** 9610521884
7.	प्रा.प्र.शि.	28.10.2018 से 31.10.2018 तक	**करमों की ढाणी** (जैसलमेर)। चांदन से करमा। जोधपुर-जैसलमेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर करमों की ढाणी फांटे पर उतरे। **सम्पर्क सूत्र :** 8209110640
8.	प्रा.प्र.शि.	28.10.2018 से 31.10.2018 तक	**किलचू** (बीकानेर)। चौपड़ा कटला से बसें। **सम्पर्क सूत्र :** 9413388044
9.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	29.10.2018 से 01.11.2018 तक	जगदम्बा सी.सै. स्कूल, **नांगल-जैसाबोहरा** (जयपुर)।
10.	प्रा.प्र.शि.	29.10.2018 से 01.11.2018 तक	**कांकाणी** (जोधपुर)। जोधपुर-पाली मार्ग पर।
11.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	29.10.2018 से 01.11.2018 तक	**तखतगढ़** (पाली)। अभय नोबल स्कूल। सांडेराव, सुमेरपुर से जालोर मार्ग पर। **सम्पर्क सूत्र :** 9413078545
12.	मा.प्र.शि.	28.10.2018 से 03.11.2018 तक	**बाप** (जोधपुर)। जैसलमेर, पोकरण, फलोदी, बीकानेर से हर समय बस। **सम्पर्क सूत्र :** 9672840955, 9414149797
13.	प्रा.प्र.शि.	28.10.2018 से 31.10.2018 तक	**बोघेरा** (चूरू)। सरदारशहर निजी बस स्टैण्ड से प्रातः 7.30, 9.00, 11.45 तथा 1.00 बजे साहवा रूट पर जाने वाली बस से बोघेरा उतरें।
14.	प्रा.प्र.शि.	01.11.2018 से 04.11.2018 तक	शंखेश्वर महादेव **डोडियाली** (जालोर)। हरजी व उम्मेदपुर से बस व टैक्सी।
15.	मा.प्र.शि.	28.10.2018 से 03.11.2018 तक	**घनोप माता** (भीलवाड़ा)। शाहपुरा-केकड़ी मार्ग पर फूलियाथाना से 5 किमी पर मंदिर।
16.	प्रा.प्र.शि.	02.11.2018 से 05.11.2018 तक	**उदट** (बीकानेर)। बीकानेर, कोलायत, नोखड़ा से बसें। **सम्पर्क सूत्र :** भंवरसिंह उदट : 9783134728
17.	प्रा.प्र.शि.	02.11.2018 से 05.11.2018 तक	**भगतपुरा** (सीकर)।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	02.11.2018 से 04.11.2018 तक	**वालोदरा** (गुजरात)। मेहसाणा के नजदीक स्थित।
19.	प्रा.प्र.शि.	02.11.2018 से 04.11.2018 तक	**समौगांव**,तहसील सिद्धपुर, मेहसाणा (गुजरात)।
20.	प्रा.प्र.शि.	02.11.2018 से 05.11.2018 तक	**भांवता** (कुचामन) जिला नागौर। कुचामन से पर्याप्त साधन। **सम्पर्क सूत्र :** 9828223145, 9783233585
21.	प्रा.प्र.शि.	03.11.2018 से 06.11.2018 तक	**घंटियाल बड़ी** (बीदासर-चूरू)। बीदासर एवं सुजानगढ़ से बसें उपलब्ध।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	03.11.2018 से 06.11.2018 तक	**सोनू** जैसलमेर, रामगढ़ से सोनू की बसें। **सम्पर्क सूत्र :** 9001071485
23	मा.प्र.शि.	10.11.2018 से 16.11.2018 तक	**वालूकड़ा** (गुजरात)। हाई स्कूल। भावनगर से 12 किमी. दूर वालूकड़ा ।
24.	मा.प्र.शि. (बालिका)	12.11.2018 से 18.11.2018 तक	**नारोली** (गुजरात)। गांव का विद्यालय भवन। थराद से बस सेवा है।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

रानी खुर्द में शतचंडी यज्ञ

पाली जिले के रानी खुर्द में श्री शतचंडी यज्ञ एवं हिन्दु धर्म सम्मेलन आयोजित किया गया। आयोजन समिति के गोविन्द सिंह के अनुसार यजमानों ने यज्ञ में आहूति देकर विश्व शांति की प्रार्थना की। रानीगांव में पहाड़ी पर स्थित चामुण्डा माता मंदिर में आयोजित यज्ञ में आस पास के गांवों के अलावा संत महात्माओं ने भी भाग लिया एवं इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा में अपने आशीर्वाचन में लाभान्वित किया। गांव में शोभायात्रा भी निकाली गई। इस अवसर पर देवी भागवत का भी आयोजन किया गया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारी प्रिय

आयुषी कंवर चौहान

को बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, राजस्थान द्वारा इस वर्ष बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार द्वारा सम्मानित किए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : ठा.सा. रामसिंह जी चांदणा, जिला जालोर।

परमवीर डिफेन्स अकेडमी

सैन्य सेवाओं को समर्पित संस्थान

OUR COURSES | NDA / CDS / SSB / OTA / AFCAT

INDIAN AIR FORCE X/Y GROUP | INDIAN NAVY | INDIAN ARMY

भाटी भवन, महिला पुलिस थाने के सामने, रातानाडा, जोधपुर-9166119493

IAS/ RAS

तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान

स्प्रिंग बोर्ड

Spring Board

Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur

website : www.springboardindia.org

माननीय सर्वोच्च न्यायालय में प्रतिवेदन के लिए

हिन्दू धर्म के प्रति सर्वोच्च न्यायालय की शंकाओं का समाधान

परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जरी महाराज

यद्यपि मुकदमे धर्म के निर्णय के नहीं थे, फिर भी सन् 1966 ई. से सन् 2004 ई. तक शास्त्री यज्ञपुरुषदास जी बनाम मूलदास भूधरदास वैश्य, डॉ. रमेश यशवन्त प्रभु बनाम प्रभाकर काशीनाथ कुन्ते, ए.एस. नारायण दीक्षितुलु बनाम आन्ध्र प्रदेश इत्यादि मुकदमों में माननीय शीर्ष न्यायालय ने निर्णय दिया है कि हिन्दू कोई धर्म नहीं है बल्कि जीवन-पद्धति है क्योंकि इसमें कोई एक धर्मग्रन्थ नहीं है, कोई धर्मगुरु नहीं है, इसमें कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है, यह विश्वासों का अजायबघर है इत्यादि कहकर माननीय शीर्ष न्यायालय ने हम हिन्दुओं की भावनाओं को जाने-अनजाने आहत किया है, जबकि हिन्दू धर्म निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित है, इसका आदिग्रन्थ भगवान श्रीकृष्णोक्त श्रीमद्भगवद्गीता है। जिसका यथावत भाष्य यथार्थ गीता आपके समक्ष प्रस्तुत है।

माननीय न्यायालय ने कहा कि हिन्दू कोई धर्म नहीं है जबकि आर्य, सनातन और हिन्दू समय-समय पर प्रचलित एक ही धर्म के नाम हैं। गीता में है-सिवाय एक परमात्मा के अन्य किसी का अस्तित्व नहीं है। जो अस्तित्व एक परमात्मा के प्रति निष्ठावान है, आर्य है। गीता आर्य संहिता है। इसमें अर्जुन के अनार्य विचारों का खण्डन तथा आर्य साधना का उपदेश स्वयं भगवान के श्रीमुख से प्रसारित हुआ है।

केवल गीता में है कि सनातन कौन है? भगवान ने बताया कि अर्जुन! आत्मा ही सत्य है, शाश्वत है, सनातन है। सनातन धर्म वह है जिसका पालन करने से आत्मदर्शन होता है, भगवद्स्वरूप में स्थिति प्राप्त होती है। भगवान ने गीता में कहा कि ईश्वर सबके हृदय में रहता है। वह सनातन आत्मा हृदय में रहता है। जिन्हें हमें प्राप्त करना है, उन परमात्मा का निवास बैकुण्ठ या स्वर्ग नहीं, आकाश में नहीं, सबके हृदय में है। संसार में जिसने भी ईश्वर को पाया हृदय में ही पाया और जो भी ईश्वर को ढूंढ़ता है, हृदय में ध्यान करके ही पायेगा। इस प्रकार मानव मात्र जो भी हृदयस्थ ईश्वर का उपासक है, हिन्दू है। अन्यत्र खोजने पर भी ईश्वर नहीं मिलेगा। संसार के भटकाव से ऊपर उठकर मनुष्य जब भी ईश्वर की शरण जाता है, हृदयस्थ ईश्वर की ही शरण जाता है। इसलिए वह सब हिन्दू हैं। उनका खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, उत्सव पर्व इत्यादि गुरुघरानों की पहचान है। संसार का कोई भी मनुष्य ईश्वर के प्रशस्त पथ पर आते ही हिन्दू हो जाता है, भले ही वह अपने को कुछ भी कहता या मानता हो। जब तक वह शरण में नहीं आता, मोह-निशा में रहता है। ज्यों ही हृदयस्थ ईश्वर की शरण में आता है, हिन्दू है। धर्म का यह 'हिन्दू' नाम अन्य किसी की देन नहीं, आदिशास्त्र गीता की ही निष्पत्ति है।

जैसा कि कहा गया अस्तित्व मात्र एक परमात्मा में निष्ठा, एक परमात्मा का ही चिन्तन, अनन्य भाव से अर्थात एक परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य का चिन्तन न करते हुए केवल एक परमात्मा का पूजन ही हिन्दू धर्म का आदर्श है। शास्त्र का लोप हो जाने से एक परमात्मा के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं की पूजा का प्रचलन समाज में था, जिसे इंगित करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने गीता (7/23) में कहा कि कामनाओं द्वारा जिनके ज्ञान का हरण कर लिया गया है, ऐसे अविवेकीजन अन्य-अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। जहाँ भी उनकी श्रद्धा है, उनकी देव-श्रद्धा को मैं ही स्थिर करता हूँ, उनके लिए फल का विधान करता हूँय किन्तु उन अल्पबुद्धिवालों का वह फल भी नाशवान है। देवपूजक देवताओं को प्राप्त होते हैं (देवता नाशवान हैं) जबकि मेरा भक्त मुझे प्राप्त होता है। गीता (9/23) में भगवान ने कहा कि देवताओं को पूजनेवाले मुझे ही पूजते हैं, अपनी समझ से वे मुझ सर्वशक्तिमान को ही ढूंढ़ रहे हैं, बुद्धि काम नहीं करती इसलिए बाहर ढूंढ़ रहे हैं। खोज मुझे ही रहे हैं, किन्तु उनकी खोज अविधिपूर्वक है इसलिए नष्ट हो जाते हैं। सही विधि है गीता। गीता (18/68-70) में भगवान ने कहा कि अर्जुन! हम दोनों के इस संवाद (गीता) को इन भटके हुए भक्तों में जो कहेगा, उसके द्वारा मैं पूजित हो जाउँगा। जो कहेगा, उसके समान मेरा प्रिय कार्य करनेवाला कोई नहीं होगा। जो इस (गीता) को कानों से सुनेगा, वह भी उत्तम लोकों को प्राप्त होगा अर्थात गीता आप सबका सम्पूर्ण धर्मशास्त्र है जिसका यथावत भाष्य 'यथार्थ गीता' है।

समाज में जो देवी-देवता पूजा चल रही है, यह शिशु को वर्णमाला ज्ञान सिखाने जैसा है कि 'क' से 'कमल' या 'ए' फार 'एप्पल'! शिक्षा की कुछ दूरी सम्पन्न होते ही यह पाठ समाप्त हो जाता है। साधना के प्रशस्त पथ पर इसी ने पहुँचाया है। अचेत आत्मा को जगाने के लिए, परमात्मा का रहस्य प्रकट करने के लिए रासलीला, रामलीला तथा कीर्तन, नृत्य-गायन धर्म की खुली पुस्तक हैं, चित्रकथा हैं, भगवान से श्रद्धा जोड़ने के लिए है। यह सभी भजन की ही आरम्भिक कक्षायें हैं।

सभी धर्म मूर्तिपूजा से आरम्भ होते हैं। मन्दिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा, मठ, विहार, प्रार्थना-स्थलियाँ इत्यादि अध्यात्म की आरम्भिक पाठशालाएँ हैं। वस्तु-पूजा, प्रतीक-पूजा, पुस्तक या लाकेट-पूजा, दीवार या चबूतरा-पूजन, आकाश या किसी दिशा की ओर मुँह करके पूजन मूर्तिपूजा के ही विभिन्न रूप हैं। अधिकांश मन्दिर, मूर्तियाँ प्राचीन पूर्वज महापुरुषों के स्मृति-स्थल ही हैं। बालक पहले इन स्थलियों पर सिर झुकाना सीखता है तो कभी वृक्ष-पूजन या क्षेत्रीय रीति-रिवाजों को अपनाता है। वृक्ष, नदी, पर्वत इत्यादि स्वयं में एक मन्दिर हैं जिनमें ईंट-पत्थर जोड़ने की भी आवश्यकता नहीं रहती। इन आरम्भिक प्रार्थना-स्थलियों की शिशु कक्षा में जीवन गुजार देना कोई बुद्धिमानी नहीं है। माता-पिता और गुरुजनों से आरम्भिक पाठ पढ़कर जिज्ञासु व्यक्ति वयस्क होते-होते महात्माओं के संसर्ग में आता है, उनसे प्रश्न-परिप्रश्न कर वह एक परमात्मा की शरण में जाते ही गीतोक्त साधन-पथ पर आ जाता है और हृदयस्थ परमात्मा की शोध में संलग्न हो जाता है, हिन्दू हो जाता है। इस प्रकार आर्य, सनातन और हिन्दू तीनों ही समय-समय पर धर्म के तत्कालीन प्रचलित नाम हैं। **हिन्दू धर्म मात्र जीवन-पद्धति नहीं है।**

गीता के अनुसार धर्म के मुख्य सिद्धान्त निम्नांकित हैं

1. श्रीमद्भगवद्गीता सृष्टि का आदिशास्त्र है। भगवान ने कहा-

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्
***विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्* (गीता 4/1)**

अर्जुन! इस अविनाशी योग को हमने आरम्भ में सूर्य से कहा, सूर्य ने इसे ही मनु से कहा तथा मनु से ही मनुष्यों की उत्पत्ति हुई है, इसलिए गीता सृष्टि का आदि धर्मशास्त्र है। (मनु की वंश-परम्परा में होने से विश्व के सभी मानव मनुज या मनुष्य कहे जाते हैं। गीता मनु से भी पूर्व सूर्य से कही गयी इसलिए यह सृष्टि का आदिशास्त्र है। पहले इस शास्त्र का नाम अविनाशी योग था। यह विस्मृत हो गया था। द्वापर में भगवान ने ही इसे पुनः कहा इसलिए इसे भगवान द्वारा कहा गया अर्थात श्रीमद्भगवद्गीता कहा जाता है। इसमें उसी ज्ञान की पुनरावृत्ति है जिसे भगवान ने सृष्टि के आदि में सूर्य से कहा था। महाभारत युद्ध से लगभग 5200 वर्ष के लम्बे अन्तराल में आज गीता का आशय पुनः खो गया था, भगवान की प्रेरणा से ही जिसका यथावत भाष्य 'यथार्थ गीता' के रूप में है) जिसके अनुसार एक परमात्मा ही सत्य है, परम तत्त्व है, सनातन है, वह कणकण में व्याप्त है। योग साधना के द्वारा वह परमात्मा दर्शन, स्पर्श और प्रवेश के लिए सुलभ है।

2. ईश्वर का निवास हृदय देश में है। भगवान ने कहा

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
***ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्* (गीता, 13/17)**

परमात्मा ज्योतियों का भी ज्योति है। अन्धकार से अत्यन्त परे है। वह प्राणिमात्र के हृदय-देश में निवास करता है (और भी देखें-गीता, 18/61)। भगवान हृदय में रहता है तो शरण किसकी जायें? अगले ही श्लोक में उन्होंने कहा। 'तमेव शरणं गच्छ' (गीता, 18/62) अर्जुन! उस हृदयस्थ परमात्मा की शरण में जाओ। हृदयस्थ परमात्मा की शरण जाने वाला ही हिन्दू है। सम्पूर्ण समर्पण के साथ परमात्मा की शरण में जाने से सदा रहने वाला जीवन तथा सदा रहनेवाली शान्ति प्राप्त होती है।

3. एक परमात्मा में श्रद्धा स्थिर करना ही धर्म है। परमात्मा पर्यन्त दूरी तय करने की योग-साधना की विधि-विशेष का नाम यज्ञ है।

'यज्ञार्थात्कर्मणो' (गीता, 3/9)

उस यज्ञ को कार्यरूप देना ही कर्म है। उस कर्म का आचरण ही धर्म है। इसका परिणाम है मृत्यु से परे अमृत तत्त्व परमात्मा में स्थिति

'यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्' (गीता, 4/16)।

4. एक परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण ही धर्म का मूल है। गीता के अनुसार

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् (गीता 8/13)

ओम्, जो अक्षय ब्रह्म का परिचायक है उसका जप; तथा एक परमात्मा का स्मरण, किसी तत्त्वदर्शी महापुरुष के संरक्षण में ध्यान करने से परमात्मा हृदय में जागृत हो जाता है।

5. 'द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च' (गीता, 16/6)

अर्जुन! मनुष्य केवल दो प्रकार का है-देवता और असुर। जिसके हृदय में दैवी सम्पद् कार्य करती है, वह देवता हैय, तथा जिसके हृदय में आसुरी सम्पद् कार्य करती है, असुर है। अध्याय 9 में है

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभा।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥
(गीता, 9/30)

अत्यन्त दुराचारी भी एक ईश्वर का भजन करके शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है तथा सदा रहनेवाली शाश्वत शान्ति प्राप्त कर लेता है।

6. आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते। (गीता, 8/16)

अर्जुन! सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा और उनसे उत्पन्न सृष्टि, देवता तथा दानव दुःखों की खानि, क्षणभंगुर और नश्वर हैं।

'कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।'
(गीता, 7/20)

कामनाओं से जिनकी बुद्धि आक्रान्त है ऐसे मूढ़बुद्धि ही एक परमात्मा के अतिरिक्त अन्य देवताओं की उपासना करते हैं। जो मनुष्य आदिशास्त्र गीता में निर्धारित विधि को छोड़कर अन्य विधियों से यजन करते हैं, वे ही क्रूरकर्मी, पापाचारी तथा मनुष्यों में अधम हैं। (देखें, गीता, 9/27, 17/6, और 16/19)

शेष अगले अंक में ...

शाखाओं में अधिकतम संख्या दिवस

राजपूत छात्रावास फलोदी शाखा का अधिकतम संख्या दिवस 7 अक्टूबर को आयोजित किया गया जिसमें नियमित शाखा में आने वाले स्वयं सेवकों के अलावा अन्य साथी भी शामिल हुए। प्रांत प्रमुख गणपतसिंह अवाय के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम में शाखा का महत्व विषय पर चर्चा की गई। मा.प्र.शि. बाप की जानकारी दी गई एवं उपस्थित स्वयंसेवकों में से शिविर करने वालों की सूची बनाई गई। बौद्धिक खेल करवाने एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सामान्य ज्ञान की तैयारी बाबत बात हुई। शाखा में भैरूसिंह बेलवा, भवानीसिंह पीलवा, गोविन्द सिंह अवाय, जितेन्द्रसिंह खेतूसर आदि फलोदी से बाहर रहने वाले स्वयं सेवक भी पहुंचे। 30 सितम्बर को मल्लीनाथ छात्रावास बाड़मेर का अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया। जिसमें प्रांत प्रमुख महिपालसिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

सामूहिक शाखा जैसलमेर

जैसलमेर शहर प्रांत की शाखाओं की सामूहिक शाखा जवाहिर राजपूत छात्रावास में 7 अक्टूबर को लगाई गई जिसमें तनाश्रम मंडल की शाखाओं के 108 स्वयंसेवक शामिल हुए। संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम में पूज्य तनसिंह जी रचित 'उतर भड़ किवाड़ भाटी' निबंध का वाचन किया गया। पथक बांटकर खेल व सहगीतों का आनंद लिया। इसी दिन प्रातः 7 बजे प्रति सप्ताह की भांति संभागीय कार्यालय तनाश्रम में साप्ताहिक शाखा लगाई गई जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसवेक शामिल हुए।

प्रतिभा

चेतनपालसिंह को गोल्ड मैडल

बडोड़ा गांव निवासी चेतनपाल सिंह भाटी को 27 सितम्बर 2018 को राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा के 8वें दीक्षांत समारोह में टेक्सटाईल्स इंजीनियरिंग में ऑनर्स के साथ बी.टेक करने पर गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। 29 सितम्बर को बडोड़ा गांव पहुंचने पर इस युवा इंजीनियर का ग्रामीणों द्वारा स्वागत किया गया।

लक्ष्मण सिंह राठौड़ का सम्मान

नागौर जिले के रायधना गांव के मूल निवासी एवं सीबीआई न्यायालय के सेशन जज लक्ष्मणसिंह राठौड़ को सरकार द्वारा सूचना आयोग राजस्थान का अध्यक्ष बनाये जाने पर 9 अक्टूबर को अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा द्वारा सम्मानित किया गया।

गोपालसिंह बने सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

दस्सुसर निवासी गोपालसिंह राठौड़ को मध्यप्रदेश के देवास में आयोजित 64वीं राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया है। साथ ही भारत सरकार की खेलों इंडिया योजना के लिए चयनित किया गया है जिसके तहत 8 वर्ष तक प्रतिवर्ष 5 लाख रूपये अपने खेल को निखारने के लिए मिलेंगे। गोपाल वर्तमान में सीकर में अध्ययनरत है।

धर्मेन्द्रसिंह काणेटी को मातृशोक

गुजरात में संघ के स्वयंसेवक धर्मेन्द्रसिंह काणेटी (प्रथम) की माताजी श्रीमती आनंदबा रणजीतसिंह काणेटी का 27 सितम्बर को देहावसान हो गया। धर्मेन्द्रसिंह का पूरा परिवार संघ से जुड़ा हुआ है। परमेश्वर दिवगंत आत्मा को शांति एवं शोक संतप्त परिवार को संबल प्रदान करें।

(पृष्ठ दो का शेष)

जीवनोपयोगी...

इनके अतिरिक्त स्नातकोत्तर स्तर के कुछ कोर्स इन प्रकार है :

(A) एम.एस.सी. इन बायोटेक्नोलॉजी।
(B) एम.टेक. इन बायोटेक्नोलॉजी।
(C) एम.एस.सी. इन एग्रीकल्चर बायोटेक्नोलॉजी।
(D) एम.बी.एस.सी. इन वेटरिनरी बायोटेक्नोलॉजी।
(E) एम.एस.सी. इन मरीन बायोटेक्नोलॉजी।
(F) एम.एस.सी. इन मेडिकल बायोटेक्नोलॉजी।

इनके अतिरिक्त एडवान्स्ड कोर्सेज के रूप में पी.एच.डी. का विकल्प भी उपलब्ध है।

भारत में बायो टेक्नोलॉजी कोर्सेज की उपलब्धता की दृष्टि से कुछ प्रमुख युनिवर्सिटीज व कॉलेज की सूची यहां प्रस्तुत है :

(A) Jawahar Lal Nahru University (JNU).
(B) Delhi Technological University.
(C) Shivaji University, Vidhya Nagar Maharastra.
(D) Anna University, Tirunelveli, tamilnadu.
(E) IIT Kharagpur.
(F) IIT Delhi.
(G) National Institute of Immunology.
(H) Indian Institute of Science, Bangalore.
(I) Centre for Cellular and Molecular Biology (CCMB), Hyderabad.

(क्रमशः)

माउंट आबू...

इस सुन्दर झील के पास मुगल बादशाह जहांगीर ने सुन्दर दौलत बाग लगवाया तथा बादशाह शाहजहां ने झील के किनारे संग-ए-मरमर की बारहदरी बनवाई। राजा अर्णोराज चौहान द्वारा बनवाई सुन्दर आना सागर झील आज अजमेर शहर के मध्य अपना सौन्दर्य बिखेरती विद्यमान है।

(पृष्ठ चार का शेष)

व्यक्तिगत स्वतंत्रता...

मनुष्य को तो बनाया ही इसीलिए गया है ऐसा महापुरुष कहते हैं ऐसे में इसे धर्म से जोड़ना धर्म के प्रति नासमझी का ही कारण है लेकिन यह एक सामाजिक मान्यता अवश्य है। अनुष्ठानों की शुद्धता-अशुद्धता के नियम समाज तय करता है, समूह तय करता है या उस अनुष्ठान से जुड़े लोग तय करते हैं और उस अनुष्ठान को मानने वाले लोगों को उन नियमों का पालन करना चाहिए। यहां भी व्यक्ति और समूह के अधिकारों के संतुलन का ही प्रश्न है। मंदिर में जाना एक अनुष्ठान है और उस अनुष्ठान के प्रति श्रद्धा रखने वालों को तय करने का अधिकार होना चाहिए कि उनके उस अनुष्ठान के क्या विधि निषेध होंगे। यदि व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर उन विधि निषेध को नकारा जाएगा तो निश्चित रूप से समूह के अधिकार पर व्यक्ति के अधिकार को तरजीह दी जा रही है ऐसे में यहां भी वही संतुलन अपेक्षित है। ना ही तो व्यक्ति के अधिकारों के नाम पर उसे समाज की व्यवस्था, मान्यता एवं मर्यादाओं के विध्वंस का अधिकार होना चाहिए और ना ही समाज या समूह को इतना निरकुंश होना चाहिए कि व्यक्ति का व्यक्तित्व ही खतरे में पड़ जाए। इनके बीच सम्यक संतुलन ही भारतीयता है।

नोखा ने मनाई अपने संस्थापक की जयंती

श्री करणी राजपूत छात्रावास नोखा में नोखा नगर के संस्थापक महाराजा गंगासिंह बीकानेर की जयंती 3 अक्टूबर को मनाई गई। इस अवसर पर राजपूत युवा सम्मेलन भी आयोजित किया गया। वक्ताओं ने प्रथम विश्व युद्ध में अपनी अद्भुद नेतृत्व क्षमता एवं वीरता का परिचय देने वाले महाराजा गंगासिंह के जीवन पर प्रकाश डाला। तात्कालिक विश्व की परिस्थितियों को समझ कर तद्नुकूल बीकानेर राज्य की जनता की समृद्धि के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों को याद किया गया एवं वर्तमान में भी उनके जैसी दूर दृष्टि के साथ जमाने के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ने की आवश्यकता जताई। सम्मेलन में राजनीतिक वातावरण पर भी चर्चा की गई एवं समाज के सामूहिक हितों के साथ कुठाराघात करने वालों को सामूहिक रूप से सबक सिखाने की बात कही गई। नोखा के राजपूत छात्रावास के निर्माण में महत्ती भूमिका निभाने वाले लक्ष्मणसिंह धुम्पालिया, रामसिंह रोड़ा आदि का स्मरण किया गया। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने एवं महापुरुषों द्वारा दिखाए गए मार्ग पर अग्रसर होने का आह्वान किया गया। नोखा में नगर के संस्थापक गंगासिंह जी की भव्य मूर्ति भी एक वर्ष के भीतर लगाने का निर्णय लिया गया। कार्यक्रम को गिरधारीसिंह राजवी, भूपेन्द्रसिंह कक्कू, अनोपसिंह चरकड़ा, सवाईसिंह चरकड़ा, मेघसिंह नोखा गांव, अक्षयसिंह सिगजुरु, रघुवीरसिंह ढिंगसरी, राणीदानसिंह मोरखाना, दिलीपसिंह मोरखाना, मेघसिंह हिम्मतसर, मनमोहनसिंह जैसलसर, ओंकारसिंह रामसर, करणीसिंह भेळू, भूपेन्द्रसिंह आदि ने संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन रामसिंह चरकड़ा ने किया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र में कार्यरत सभी सामाजिक संगठनों की भूमिका रही। युवाओं ने विशेष प्रयास किया।

'दसवीं युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशाला अलवर में'

श्री क्षत्रिय युवक संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में चल रही युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशालाओं की श्रृंखला में दसवीं कार्यशाला अलवर के अलवा बाग होटल में 7 अक्टूबर को रखी गई। कार्यशाला को संबोधित करते हुए भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी राजेन्द्रसिंह आंतरी व राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी महेन्द्र प्रतापसिंह गिराब ने कहा कि विपरीत परिस्थितियां सफलता की प्रेरक होती हैं। यदि हमारी परिस्थितियां विपरीत हैं तो हम माने कि परमेश्वर की विशेष कृपा है जिसने हमारे में संघर्ष की क्षमता विकसित करने का वातावरण उपलब्ध करवाया है। उन्होंने कहा कि हर तैयारी में समान समय एवं मेहनत करनी पड़ती है इसलिए हमें जब उतना ही समय और मेहनत

खर्च करनी है तो बड़ी उपलब्धि के लिए तैयारी करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमने अनेक भ्रांतियां पाल रखी हैं जिनमें से एक यह भी है कि हमारा राज था जबकि राज कुछ लोगों को मिला करता है शेष को तो सदा से अपने आपको स्थापित करने के लिए मेहनत करनी पड़ी थी और आज भी करनी है इसलिए मेहनत से घबराए बिना बड़ी सोच के साथ सकारात्मक प्रयास शुरू करें। बड़ी उपलब्धि बड़ी सोच से ही मिलती है। उन्होंने कहा कि राजपूत का आगे आना वैश्विक मांग है क्योंकि यह सामान्य सोच है कि राजपूत आगे आए तो न्याय की व्यवस्था स्थापित होगी इसलिए हमारा आगे बढ़ना हमारी ही नहीं बल्कि इस सृष्टि की मांग है। आरक्षण के विषय में उन्होंने स्पष्ट किया कि निश्चित रूप से आरक्षण सामूहिक रूप से समाज की समस्या हो सकती है लेकिन व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में तो मेहनत करने वालों को स्थान मिलता ही है इसलिए आरक्षण जैसी नकारात्मक बातों पर सोचे बिना व्यक्तिगत मेहनत का स्तर बढ़ायें। सिविल सेवाओं में हमारे समाज में तैयारी करने वालों में से सफलता का प्रतिशत आज भी अधिक है इसलिए तैयारी करने वाले बढ़ेंगे तो संख्या भी बढ़ेगी और यदि हम लोग व्यवस्था में निर्णायक स्थान पर होंगे तो न्याय की व्यवस्था स्थापित करने में निश्चित रूप से सहयोग मिलेगा।

राणा पूंजा की जयंती मनाई : स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के संघर्ष में महाराणा प्रताप के मुख्य सहयोगी रहे राणा पूंजा की जयंती 5 अक्टुबर को नोखा स्थित चरकड़ा हाउस में मनाई गई। वक्ताओं ने महाराणा के लिए उनके समर्पण एवं राष्ट्र यज्ञ में दी गई आहूति को श्रद्धापूर्वक याद किया। इस अवसर पर रामसिंह चरकड़ा सहित सिंजगुरू सरपंच अक्षयसिंह, पुरखाराम सियोल, भागचंद विश्नोई, छोटूराम नायक, पुरूषोत्तम स्वामी, कबीर खान, मघाराम तेली, सुभाष शर्मा, जगदीश नायक, बीरबल नायक, मानाराम नायक आदि सभी समाजों के अनेक लोग उपस्थित रहे।

भीमसिंह सुवाणा की पुण्यतिथि मनाई

शिक्षाविद् एवं सामाजिक कार्यकर्ता भीमसिंह सुवाणा की नवमी पुण्यतिथि 8 अक्टूबर को श्री दाता राजपूत छात्रावास भोपालगढ़ में मनाई गई।

स्व. सुवाणा के चित्र पर पुष्पांजलि के पश्चात आयोजित सभा में नांद गौशाला महंत समताराम जी, संत लालपूरी, महंत वासूदेव महाराज, करण सिंह उचियाराड़ा, लक्ष्मणसिंह रतकुड़िया, विक्रमसिंह गोगूंदा, हनुमानसिंह खांगटा सहित अनेक वक्ताओं ने संबोधित किया। वक्ताओं में स्वर्गीय भीम सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। राजनीति, आरक्षण, सामाजिक रूढ़ियों, पर्यावरण संरक्षण आदि विषयों पर भी वक्ताओं ने अपनी बात रखी।

इतिहास में राठौड़ों का महत्व पर संगोष्ठी

इतिहास में राठौड़ शासकों का महत्व विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 6 व 7 अक्टुबर को जोधपुर के मेहरानगढ़ स्थित चौकेलाव महल में आयोजित हुई।

महाराज मानसिंह पुस्तक प्रकाशन शोध केन्द्र मेहरानगढ़ एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली में संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस संगोष्ठी में कुल 27 शोध पत्र पढ़े गए। समापन समारोह में पूर्व महाराजा गजसिंह, तारातरा महंत प्रतापपुरी आदि ने भी शिरकत की। डा. सद्धीक मोहम्मद ने अंत में शोध सारांश प्रस्तुत किया। पूर्व महाराजा गजसिंह ने तथ्यात्मक शोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता जताई।

परमार वंश के समाज बंधुओं की बैठक संपन्न

जैसलमेर जिले के खुहड़ी, करड़ा, पोछीना, बैरसियाला, मिठड़ाऊ, केसरसिंह का तला, गजसिंह का तला, गूंजनगढ़, लूणार, मसूरिया, छंतागढ़, भींयासर, दवाड़ा, मूलाना, धायसर, डेलासर, हडडा, पोहरा, लाखा, देवड़ा, सांखला, सेलता, सेउवा, मोकला, खडेरों की ढाणी सहित अनेक गांवों के सोढ़ा, सांखला, खड़ेरा, बरन, जागा, सेलत, पेस सहित 35 शाखाओं के परमार राजपूतों की एक बैठक जैसलमेर के जोशीड़े फांटे स्थित हरसिद्धि मंदिर में 11 अक्टूबर को आयोजित की गई जिसमें वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों एवं विधान सभा चुनावों को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। राजनीति में समाज का प्रतिनिधित्व बढ़े इसके लिए भी विचार विमर्श किया गया। समाज में व्याप्त रूढ़ियों को लेकर भी चिंतन किया गया एवं नशे की प्रवृति को लेकर चिंता जताई गई। शिक्षा के प्रति जागृति हेतु विशेष प्रयासों की आवश्यकता जताई गई।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org